दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक :12.11.2024

प्रकाशनार्थ

दिनांक 12.11.2024 गोरखपुर। दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोरखपुर के प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग के तत्वावधान में 'सम्राट अशोक का धम्म एवं उसकी प्रासंगिकता' विषय पर विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया।

मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. दिग्विजयनाथ, आचार्य एवं पूर्व अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर ने कहा कि सम्राट अशोक का धम्म उनके द्वारा नैतिक नियमों का संग्रह था जो सर्वसाधारण के लिए मानवधर्म था। साम्राज्य विस्तार की दृष्टि से सम्राट अशोक अद्वितीय है, उन्होंने भय से साम्राज्य विस्तार के जगह प्रेम से साम्राज्य विस्तार को महत्व दिया। अशोक के धम्म में कल्याणकारी उपायों को शामिल किया गया, जैसे पेड़ लगाना, कुएं खोदना और सभी के लिए शिक्षा व स्वास्थ सुविधाएँ प्रदान करना। इसके साथ ही इनके धम्म में बड़े के साथ ही सेवकों के साथ भी सम्मान पूर्वक व्यवहार की बात कही गयी। अशोक के धम्म के सिद्वान्त विविधता में एकता बनाये रखने में समकालीन चुनौतियों का समाधान करने में मदद कर सकते हैं। किसी शासक व प्रशासक द्वारा मनुष्यता के उत्थान के लिए किये गये कार्य ही उत्कृष्टता के परिणाम होते है। जहॉ शासकों ने देवत्व को एवं देवता मिश्रित धर्म को महत्व दिया, वही अशोक ने मनुष्य केन्द्रित धर्म की स्थापना की। अशोक ने केवल आदेश ही पारित नही किया बल्कि उन्हें समाज में अनुपालन कराने का भी प्रयास किया। भावनात्मक एकता की स्थापना अशोक के धम्म के मूल में है। वर्तमान सामाजिक परिवेश में भी अशोक के धम्म की प्रासंगिकता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. ओम प्रकाश सिंह ने कहा कि आदर्श आचार संहिता का संकलन ही अशोक का धम्म है जिसे उन्होंने सामाजिक आचार संहिता के रूप में पूरी दुनिया को दिखाया। श्रुति, स्मृति व लोकाचार प्राचीन भारतीय चिन्तन के मूल आधार हैं। वेदों में लिखे शब्दों के अर्थ विपर्यय के कारण उनका अलग अर्थ लगा लिया गया, जिससे मूल संदेश को समझा ही नहीं जा सका। धर्म के दो पक्ष– ज्ञान पक्ष व कर्मकाण्ड हैं। दुनिया के सभी धर्मों के ज्ञान काण्ड तो ठीक है परन्तु धार्मिक मान्यताओं के कारण कर्मकाण्ड में समस्या आती है। इस सन्दर्भ में हमारा सनातन धर्म कहता है कि सत्य एक है, विद्वान लोग इसकी व्याख्या अलग–अलग प्रकार से करते हैं।

उक्त कार्यक्रम में आभार ज्ञापन श्री सुरेन्द्र चौहान, स्वागत उद्बोधन डॉ. रामप्रसाद यादव आभार ज्ञापन एवं संचालन डॉ. कामिनी सिंह ने किया। इस अवसर पर प्रो. अर्चना सिंह, डॉ. निधि राय, डॉ. धीरज सिंह, डॉ. शिव कुमार, श्री इन्द्रेश पाण्डेय, डॉ. सुनील सिंह, श्री विवेकानन्द, डॉ. श्याम सिंह सहित महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापक, कर्मचारी व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

उक्त कार्यक्रम की जानकारी महाविद्यालय के सह–मीडिया प्रभारी डॉ सुनील कुमार सिंह ने दी।

डॉ.(सुनील कुमार सिंह)
सह–प्रभारी सूचना एवं जनसम्पर्क